International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 06, June 2020
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और सामाजिक–आर्थिक कारकों के बीच संबंध : एक विश्लेषण

Surender Singh, Lecturer in Education,

Major Nafe Singh Kungariya College of Education, Kungar, Bhiwani (Haryana)
DOI:aarf.ijhrss.44512.21368

सार

पिछले कई दशकों में यह व्यापक रूप से सिद्ध हो चुका है कि किसी परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और स्कूल की उम्र के बच्चों की शैक्षणिक सफलता के बीच एक संबंध है। दूसरी ओर, परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक सफलता के बीच के संबंध की मूलभूत प्रक्रिया को अभी भी पूरी तरह से समझा नहीं गया है। सरल सैंपलिंग का उपयोग करके, शोधकर्ताओं ने हरियाणा राज्य के आठ अलग–अलग माध्यमिक स्कूलों से अस्सी प्रश्नावली एकत्र कीं। इन स्कूलों के शिक्षकों को एक प्रश्नावली दी गई जिसमें चार मुख्य संरचनाएं थीं जो माता–पिता की शैक्षिक उपलब्धि, माता–पिता का पेशा, माता–पिता की आय और माता–पिता की शैक्षणिक सफलता को मापती थीं। दूसरी ओर, अध्ययन ने सहसंबंध गुणांक के उपयोग से यह खोज की कि शैक्षणिक उपलब्धि का तीन स्वतंत्र कारकों, अर्थात् माता–पिता के शिक्षा स्तर, माता–पिता के पेशे और माता–पिता की आय के साथ एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध था। इसके अलावा, प्रतिगमन विश्लेषण के निष्कर्षों से यह पता चला कि तीन अलग–अलग संरचनाओं का शैक्षणिक उपलब्धि पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण, सकारात्मक और सीधा प्रभाव था।

मूल भाब्द : *सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा, माध्यमिक विद्यालय, छात्र।*

प्रस्तावना

एक राष्ट्र में मानव संसाधन विकास (एचआरडी) का एक महत्वपूर्ण संकेतक होने के साथ–साथ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रावधान हर बच्चे का एक मौलिक जन्मसिद्ध अधिकार है, चाहे उसकी जाति, रंग, धर्म या अन्य कारक कुछ भी हों। दूसरी ओर, इस संबंध में धनी राष्ट्रों और विकासशील राष्ट्रों के बीच

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

एक महत्वपूर्ण असमानता है। चूंकि पाकिस्तान एक विकासशील राष्ट्र है, इसलिए एक छात्र के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रावधान विभिन्न परिस्थितियों से प्रभावित होता है। किसी बच्चे की सामाजिक–आर्थिक स्थिति(एसईएस) सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है जो बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा (क्यूई) प्रदान करने के साथ सीधे संबंधित है। क्यूई प्रदान करने का परिणाम निस्संदेह एक परीक्षा में उच्चतर शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर (एएस) प्राप्त करना होता है। एक बच्चे के जीवन में, एएस पर विचार करना एक आवश्यक घटक है। किसी शिक्षार्थी के शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में उसके प्रदर्शन का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि शिक्षार्थी सफल हुआ या नहीं।

अधिकांश मामलों में, एक बच्चे की सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस) को बच्चे के माता–पिता के पेशे की स्थिति (ओएस), शैक्षिक स्तर (ईएल), और आय स्तर (आईएल) द्वारा परिभाषित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, कई शोधों ने एसईएसऔर बच्चों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के बीच के संबंध की जांच की है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस) को आमतौर पर तीन प्रमुख समूहों में विभाजित किया जाता हैरू प) निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पप) मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति, और पपप) उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति। इन वर्गों का उपयोग परिवार या व्यक्ति की तीन अलग–अलग पहलुओं – आय, शिक्षा, और रोजगार – को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिनमें वे आ सकते हैं। बैटल द्वारा किए गए शोध ने दिखाया कि निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले घरों के बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि उन छात्रों की तुलना में धीमी और खराब होती है जो बेहतर सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से आते हैं। पाकिस्तान में किए गए एक अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार, माता–पिता की शिक्षा का स्तर और पिता का रोजगार उनके बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

साक्ष्य यह सुझाव देते हैं कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति(एसईएस) और छात्रों की उपलब्धि ग्रेड के बीच एक सकारात्मक संबंध है। यह दिखाया गया है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले बच्चे शैक्षिक गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले बच्चों की तुलना में परीक्षाओं में उच्च अंक प्राप्त करते हैं। वे परिवार जिनके पास सीमित धन स्रोत होत हैं, वे अधिक संभावना रखते हैं कि उन्हें पालन–पोषण में उदासी, अव्यवस्था और अलगाव, साथ ही पारिवारिक विवाद और अन्य समान समस्याओं का सामना करना पड़े। परिणामस्वरूप, इन तत्वों की उपस्थिति छात्रों का ध्यान उनके शैक्षणिक प्रयासों से हटाकर अन्यत्र मोड़ देती ह, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों की सफलता के स्तर में कमी आती है। किसी व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को उनके चरित्र के भविष्यवक्ता के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस) खराब शैक्षणिक उपलब्धि का एक महत्वपूर्ण पूर्वानुमान और संकेतक है। इसका कारण यह है कि निम्नएसईएस परिवारों से आने वाले छात्र अपनी शैक्षिक

गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं और उनके घर पर पर्याप्त शैक्षिक सुविधाओं की कमी होती है, जैसे उच्च गुणवत्ता और मात्रा में पर्याप्त शिक्षण सामग्री की कमी। इसकी तुलना उच्च एसईएस परिवारों से आने वाले छात्रों से करें। इसलिए, छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और उच्च ग्रेड प्राप्त करने की क्षमता पर प्रभाव डाल सकती है। प्रांत में किए गए एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रकार के शोध में यह पाया गया कि कुल पारिवारिक आय और पिता के रोजगार ग्रेड तथा स्कूल में उनके बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध है।

साहित्य समीक्षा

एन (2014) इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के उन छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का मूल्यांकन करना है जो दक्षिणी टेक्सास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित स्कूलों में पढ़ते हैं। शोध उन कठिनाइयों को स्वीकार करता है जिनका सामना ग्रामीण समुदाय करते हैं, क्योंकि उनके पास अक्सर महानगरीय क्षेत्रों की तुलना में संसाधनों तक सीमित पहुंच होती है। एन मानकीकृत परीक्षण परिणामों का उपयोग करके मात्रात्मक विश्लेषण के माध्यम से छात्र सफलता के संकेतकों का अध्ययन करती हैं। वह माता–पिता की आय, उनकी शिक्षा का स्तर, और उनके रोजगार जैसे अन्य पहलुओं को भी ध्यान में रखती हैं। आंकड़ों के अनुसार, सामाजिक–आर्थिक स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध प्रतीत होता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों से आने वाले अपने सहपाठियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, शोध इस बात पर जोर देता है कि लक्षित हस्तक्षेपों और संसाधनों के आवंटन के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक अंतराल को दूर करना महत्वपूर्ण है ताकि विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों को सहायता प्रदान की जा सके।

चलीहा और हजारिका (2012) इस अध्ययन में हम असम के डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन की जांच करेंगे। विशेष रूप से, हम जांच करेंगे कि उच्च शिक्षा स्तर पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति शैक्षणिक प्रदर्शन को कैसे प्रभावित करती है। शोध मिश्रित–तरीकों की तकनीक का उपयोग करता है, जिसमें छात्रों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों पर जानकारी एकत्र करने के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार दोनों शामिल हैं। निष्कर्षों से यह सिद्ध होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस) और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है, जिसमें उच्च एसईएस वाले घरों से आने वाले छात्र निम्न एसईएस पृष्ठभूमि वाले छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि सामाजिक–आर्थिक कारक, जैसे कि माता–पिता की शिक्षा का स्तर और पारिवारिक समर्थन, छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन पहलुओं के साथ–साथ वित्तीय संसाधनों की भूमिका पर भी चर्चा की गई है। परिणाम इस बात को रेखांकित करते हैं कि उच्च

शिक्षा मानकों की प्राप्ति पर सामाजिक–आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को कम करने के लिए समावेशी नीतियों और समर्थन प्रणालियों को लागू करना कितना महत्वपूर्ण है।

फैटर (2013) यह लेख अल्पसंख्यक शिक्षा के ढांचे के भीतर सामाजिक–आर्थिक वर्ग, जातीयता, और शैक्षणिक सफलता की अंतःक्रियात्मकता की जांच करता है। इस परियोजना का उद्देश्य इन तत्वों के शैक्षिक अनुभवों और परिणामों पर प्रभाव डालने के तरीकों की जांच करना है, विशेष रूप से विविध छात्र समूहों पर जोर देते हुए। फैटर सामाजिक–आर्थिक स्थिति (एसईएस) और जातीयता के छात्रों की शैक्षिक संसाधनों, अवसरों और समर्थन प्रणालियों तक पहुंच को प्रभावित करने के जटिल तरीकों की जांच करते हैं। वह ऐसा साक्षात्कार और केस स्टडी जैसी गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग करके करते हैं। निष्कर्ष कई जटिल अंतःक्रियाओं पर प्रकाश डालते हैं, जिसमें यह तथ्य शामिल है कि सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ अल्पसंख्यक छात्रों को पहले से ही जिन शैक्षिक असमानताओं से जूझना पड़ता है, उन्हें और बढ़ा देती हैं। फैटर सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षाशास्त्र को अपनाने और विभिन्न सामाजिक–आर्थिक और जातीय पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों के संचालन की आवश्यकता पर जोर देते हैं। इससे अंततः समान और समावेशी शैक्षिक प्रथाओं को बढ़ावा मिलेगा।

ग्रेट्ज (2007) इस अध्ययन का उद्देश्य वित्तीय दबाव और माता–पिता के व्यवहार का किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव की जांच करना है, विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में अफ्रीकी अमेरिकी और यूरोपीय अमेरिकी मूल के एकल–अभिभावक और दो–अभिभावक परिवारों के संदर्भ में। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं और जातियों के बीच सामाजिक–आर्थिक निर्धारकों और छात्र परिणामों क बीच संभावित अंतरों पर प्रकाश डालना है। यह एक तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से पूरा किया जाएगा। शोध से पता चलता है कि वित्तीय कठिनाई की उपस्थिति का माता–पिता के व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जो बदले में किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध यह रेखांकित करता है कि शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करने वाले सामाजिक–आर्थिक मुद्दों के तंत्र को समझने का प्रयास करते समय सांस्कृतिक और पारिवारिक परिस्थितियों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। यदि नीति निर्माता और शिक्षक इस बात का स्वीकार करते हैं कि परिवारों के अनुभव उनकी जातीयता और घर की संरचना के आधार पर विविध होते हैं, तो वे हस्तक्षेपों को विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने और सभी छात्रों के लिए समान शैक्षिक अवसर बनाने के लिए समायोजित कर सकते हैं।

हिजाजी और नकवी (2006) इस अध्ययन का उद्देश्य निजी विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच करना है। इस अध्ययन में माता–पिता की शिक्षा का स्तर, परिवार की आय, और शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता जैसे विभिन्न सामाजिक–आर्थिक

कारकों की जांच की जाती है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि इन कारकों का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। शोधकर्ता सर्वेक्षण डेटा के विश्लेषण के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं और छात्र प्रदर्शन के बीच मजबूत संबंध प्रकट करते हैं। ये सहसंबंध यह रेखांकित करते हैं कि पारिवारिक पृष्ठभूमि शैक्षिक उपलब्धियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा, अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि निजी संस्थानों के लिए यह आवश्यक है कि वे छात्रों की विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समर्थन प्रणालियाँ और हस्तक्षेप बनाएँ। निजी शैक्षणिक संस्थान एक समावेशी और सहायक सीखने के वातावरण को बढ़ावा देकर छात्र उपलब्धि में सुधार कर सकते हैं और विभिन्न छात्र समूहों में सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

हॉचशाइल्ड (2003) पब्लिक स्कूल्स में सामाजिक वर्ग के गतिविधियों और इस अवधारणा के परिणामों की विवेक देते हैं जो छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए है। विद्यालय वातावरण के सन्दर्भ में, अध्ययन जांचता है कि सामाजिक–आर्थिक अंतर किस प्रकार व्यक्त होते हैं, और ये असमानताएँ छात्रों के शैक्षणिक अनुभवों और संभावनाओं पर कैसे प्रभाव डालती हैं। हॉचशाइल्ड बताते हैं कि सामाजिक वर्ग किस प्रकार छात्रों, शिक्षकों, और प्रशासकों के बीच संबंधों को प्रभावित करता है, जो असमान शक्षणिक परिणामों में योगदान करता है। यह क्वालिटेटिव विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, जिसमें साक्षात्कार और अवलोकन शामिल हैं। अध्ययन बताता है कि विद्यालय नीतियों, संसाधनों के वितरण, और शिक्षण तकनीकों कैसे सामाजिक–आर्थिक असमानता को बढ़ावा देते हैं या उसके प्रभाव को कम कर सकते हैं। संरचनात्मक परिभाषित होने वाली बाधाओं का सामना करके और समानता को बढ़ावा देने वाली नीतियों को क्रियान्वित करके, सार्वजनिक स्कूल ऐसा शैक्षणिक वातावरण विकसित कर सकते हैं जो समावेशी और सहायक है, जिससे सभी छात्र अपनी पूरी क्षमताओं को देख सकें।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस अनुसंधान को सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध की जांच करने के लिए सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग किया गया था। अनुसंधान उद्देश्यों को पूरा करने और अनुसंधान के प्रतिज्ञान का मूल्यांकन करने के लिए प्रारंभिक और संबंध का विश्लेषण किया गया। अनुसंधानकर्ताओं न हरियाणा राज्य के आठ माध्यमिक विद्यालयों से आठ से अस्वीकृतियों को एकत्र करने के लिए एक सुविधाजनक नमूना उपयोग किया। इन विद्यालयों के अध्यापकों को एक प्रश्नावली दी गई थी जिसमें माता–पिता की शैक्षणिक स्तर, माता–पिता का व्यवसाय, माता–पिता की कुल आय, और छात्रो की शैक्षणिक सफलता को मापने वाले चार मुख्य संरचनाओं को मापते थे। उत्तरदाताओं से प्राप्त प्रश्नपत्रों को आंतरिक रूप से संबंधित हैं या नहीं, इसे निर्धारित करने के लिए अनुसंधानकर्ताओं ने क्रोनबाच का अल्फा का उपयोग किया।

➢ परिकल्पना

एच 1 : हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों में, माता–पिता की शिक्षा स्तर और उनके बच्चों की शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

एच 2 : हरियाणा के माध्यमिक विद्यालयों में दिखाया गया है कि माता–पिता के रोजगार और उनके बच्चों की शैक्षणिक सफलता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

एच 3 : हरियाणा के माध्यमिक विद्यालयों में, माता–पिता की संपत्ति और उनके बच्चों की शैक्षणिक सफलता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

अध्ययन के परिणाम दिखाते हैं कि सभी चरणों को अधिकतम आंतरिक प्रतिष्ठता प्राप्त हुई है, जैसा कि निम्नलिखित तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है। इससे अतिरिक्त विश्लेषण और वाद–विवाद के लिए अधिकारिक करने में सक्षम होता है।

तालिका 1 : विश्वसनीयता का परीक्षण

चर	आइटम	क्रोनबाक अल्फा
माता–पिता की शिक्षा	3	0.716
माता–पिता का व्यवसाय	3	0.731
माता–पिता की आय	3	0.720
शैक्षणिक उपलब्धि	9	0.780

डेटा विश्लेषण और परिणाम

संदर्भग्राहीयों का एक विस्तृत प्रोफाइल तालिका 2 में दिखाया गया है, जिसमें लिंग, आयु, वैवाहिक स्थिति, शिक्षा स्तर, और नौकरी का अनुभव के लिए वर्ग हैं। 100 प्रतिभागियों में से 40 पुरुष और 60 महिलाएँ थीं, जो जवाबों का बहुमत बनाती हैं। जनसंख्या का अधिकांश 36–45 आयु सीमा में था, 18–25 और 26–35 आयु समूहों में कम प्रतिशत थे। विवाहित स्थिति के बिना 70 व्यक्तियों के साथ तुलना में 30 शादीशुदा थे। अधिकांश उत्तरदाताओं ने केवल हाईस्कूल पूरी की थी, जिनमें 50 का हाईस्कूल डिप्लोमा था, 40 का डिप्लोमा था, और 10 का स्नातक का डिग्री था। सबसे अधिक लोग दो वर्षों के लिए क्षेत्र में थे। यह प्रोफाइल अध्ययन के समूह की जनसांख्यिकीय संरचना पर जानकारी प्रदान करता है, जो निर्देशित पहलों या हस्तक्षेपों की दिशा में मदद कर सकता है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं का प्रोफाइल

चर	आवृत्ति
लिंग	
पुरुष	40
महिला	60
कुल	**100**
आयु	
18.25	20
26.35	10
36.45	40
46 और उससे अधिक	30
कुल	**100**
वैवाहिक स्थिति	
अविवाहित	70
विवाहित	30
कुल	**100**
शिक्षा का स्तर	
हाई स्कूल	50
डिप्लोमा डिग्री	40
स्नातक डिग्री	10
कुल	**100**
अनुभव	
एक वर्ष	30
दो वर्ष	40
तीन वर्ष	20
चार वर्ष और उससे अधिक	10
कुल	**100**

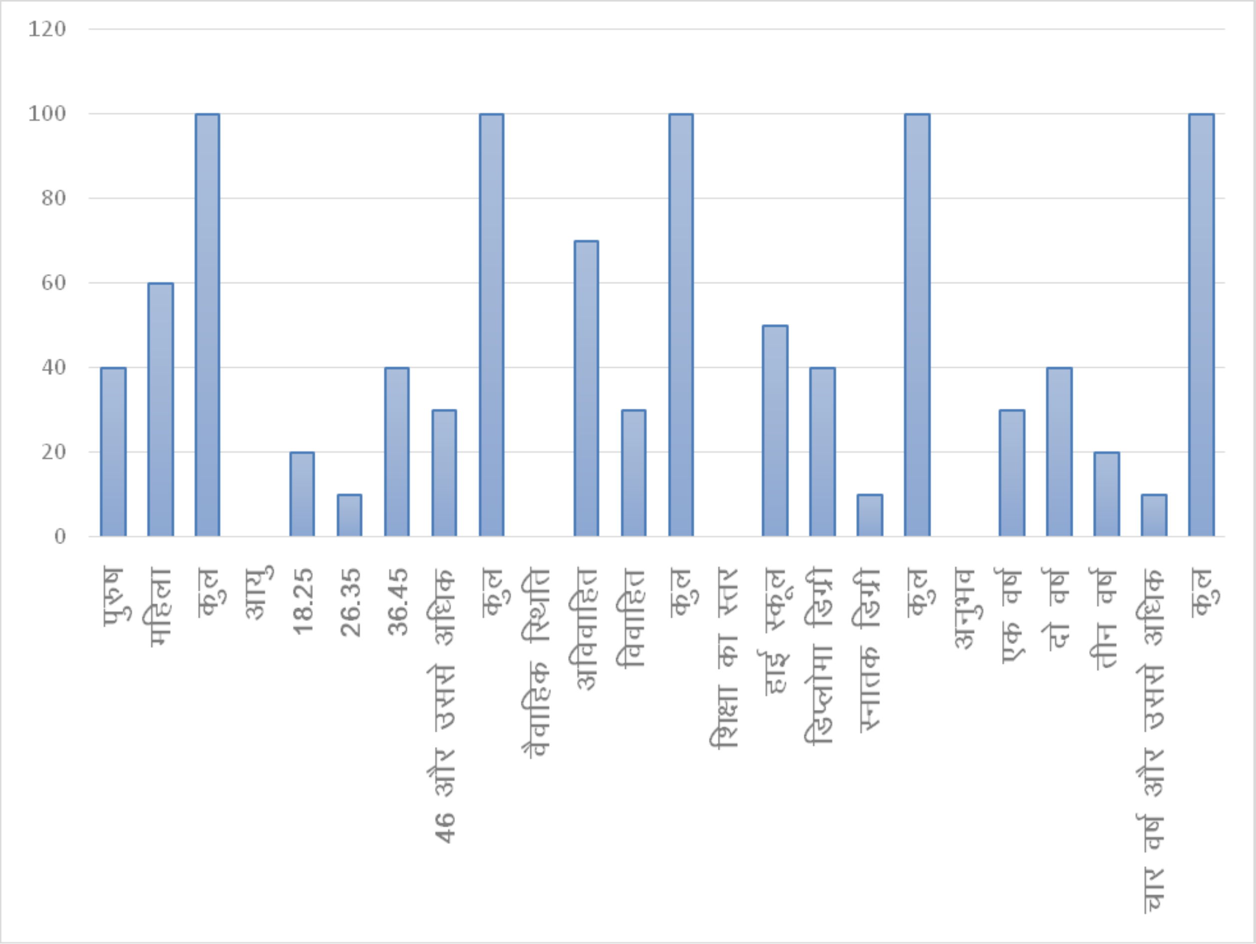

आकृति 1 : उत्तरदाताओं का प्रोफाइल

सबसे पहले, इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या हरियाणा राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में अभिभावकों की शिक्षा का स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध है।

तालिका 3 : सहसंबंध की जांच

चर	1	2	3	4
माता–पिता की शिक्षा	1			
माता–पिता का व्यवसाय	.525	1		
माता–पिता की आय	.462	.568	1	
शैक्षणिक उपलब्धि	.685	.684	.693	1

तालिका 3 में निम्नलिखित चार चरणों के लिए एसोसिएशन विश्लेषण प्रदर्शित करता हैरू शैक्षिक उत्तीर्णता, माता–पिता की आय, माता–पिता का पेशा, और माता–पिता की शिक्षा। डेटा से ये चरणों के बीच उच्चतर सकारात्मक संबंध स्पष्ट दिखाई देते हैं। माता–पिता की शिक्षा और पेशे के बीच रिश्ता

संख्यात्मक समान्तर (0.525) है, लेकिन माता–पिता की शिक्षा और आय के बीच संबंध संख्यात्मक समान्तर है (0.462 और 0.568)। माता–पिता की आय और शैक्षिक उत्तीर्णता के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक लिंक है (0.693, 0.684, और 0.685)। ये परिणाम सामाजिक–आर्थिक चरणों के शैक्षणिक परिणामों पर संभावित प्रभाव को दर्शाते हैं जिसमें अधिक माता–पिता की शिक्षा, आय, और पेशे के स्तर के बीच एक संबंध बेहतर शैक्षणिक सफलता के साथ प्रकट होता है।

तालिका 4 : प्रतिगमन का विश्लेषण

चर मान	बीटा	टी	पी
माता–पिता की शिक्षा	.394	2.410	.025
माता–पिता का व्यवसाय	.255	4.366	.002
माता–पिता की आय	.365	2.585	.015
आर	.833		
आर वर्ग	.694		
एफ परिवर्तन	41.582		

परिणामों के अनुसार रिग्रेशन विश्लेषण दिखाता है कि निर्भर चर, संभावित रूप से शैक्षिक उत्तीर्णता, और तीन पूर्वानुमान चरकृमाता–पिता की आय, पेशा, और शिक्षा का स्तरकृके बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है। माता–पिता के पेशे और शैक्षिक उत्तीर्णता के बीच सबसे अधिक सकारात्मक संबंध को सर्वोच्च बीटा मूल्य (0.255) द्वारा दिखाया गया है, जिसे माता–पिता की आय (0.365), माता–पिता की शिक्षा (0.394), और माता–पिता की पेशे के पीछे लाता है। कम च–मूल्य शून्य के विरुद्ध प्रमाण के लिए मजबूत साक्ष्य को दर्शाते हैं, जबकि टी–मूल्य सांख्यिकीय महत्वपूर्णता को इंगित करते हैं। निम्न च–मूल्य (0.05 के नीचे) के साथ, तीन पूर्वानुमान उपायों का शैक्षिक उत्तीर्णता के साथ सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है। आर–वर्ग मूल्य (0.694) द्वारा दिखाई गई अच्छाई–का–संचार दर्शाता है कि पूर्वानुमान उपाय शैक्षिक उत्तीर्णता में विविधता का लगभग 69.4: का हिस्सा निर्धारित करते हैं। पूर्वानुमान उपायों के बिना एक मॉडल के साथ तुलना की जाती है, फ बदलाव आंकड़ा (41.582) दिखाता है कि मॉडल शैक्षिक उत्तीर्णता की भविष्यवाणी को काफी बेहतर बनाता है। सामान्य रूप से, माता–पिता की आय, पेशे, और शिक्षा का स्तर उनके बच्चों की शैक्षणिक सफलता के प्रमुख पूर्वानुमान हैं, जिसमें माता–पिता की शिक्षा का सबसे अधिक प्रभाव होता है।

चर्चा

वर्तमान अध्ययन में, हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों में आर्थिक स्थिति के प्रभाव को शैक्षिक उपलब्धियों पर अन्वेषित किया गया। इस लेख में तीन प्रमुख उद्देश्य हैं, जो निम्नलिखित हैंरू 1) हरियाणा में माध्यमिक विद्यालयों में माता–पिता के शिक्षा स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों केबीच संबंध का पता लगाना। 2) हरियाणा राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की शैक्षिक प्रदर्शन के साथ माता–पिता के रोजगार के संबंध की जांच करना। 3). हरियाणा राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में माता–पिता की आय और शैक्षिक उपलब्धियों के स्तर के बीच संबंध की जांच करना।

शोधकर्ताओं ने आसानी से सैंपलिंग का उपयोग किया और हरियाणा में आठ माध्यमिक विद्यालयों से 80 प्रतिक्रियाएँ एकत्र की। इन विद्यालयों के अध्यापकों को एक प्रश्नपत्र दिया गया था जिसमें माता–पिता की शैक्षिक प्राप्ति, माता–पिता का पेशा, माता–पिता की आय, और माता–पिता की शैक्षिक उपलब्धियों को मापने वाले चार मुख्य संरचनाएँ थीं। संबंध के गणनात्मक संबंध के परिणामों के अनुसार, निर्भर चर, शैक्षिक उपलब्धि, के साथ तीन स्वतंत्र कारकों, अर्थात माता–पिता की शिक्षा स्तर, माता–पिता को रोजगार, और माता–पिता की आय, के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव है।

रिग्रेशन विश्लेषण के अनुसार किए गए अध्ययन के आधार पर, तीन अलग–अलग संरचनाओं का यह प्रभाव प्रायः स्थूल और प्रत्यक्ष था जो छात्रों की सफलता पर सांख्यिकीय रूप

निष्कर्ष

यह अनुसंधान उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच संबंध की जांच करता है। यह आय, शिक्षा, रोजगार, जाति, परिवार का प्रकार, निवास स्थान, धर्म, सामाजिक समूह, माता–पिता की शिक्षा, पेशे की स्थिति, विद्यालय का प्रकार, शैक्षिक माध्यम, और विद्यालय का स्थान जैसे विभिन्न सामाजिक–आर्थिक लक्षणों को मापता है। अध्ययन ने पाया कि मां की शिक्षा की प्राप्ति उसके बच्चों की शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव डालती है। सामाजिक–आर्थिक चरण भी छात्रों द्वारा चुनी गई उच्च शिक्षा और नौकरी के प्रकार पर प्रभाव डालते हैं। अध्ययन का सुझाव है कि माता–पिता को छात्रों को समान स्तर के आर्थिक और सामाजिक समर्थन प्रदान करना चाहिए, और सरकार को आर्थिक और सामाजिक असमर्थ समुदाय के सदस्यों के लिए शैक्षिक सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक नीतियों को विकसित करना चाहिए। सरकार को शिक्षा के अधिक व्यापक और सस्ते अवसर प्रदान करने, माता–पिता को अपने बच्चों की शिक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

संदर्भ

1. अहमर, एफ., और अंवर, डी. इ. (2013). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सामाजिक–आर्थिक स्थिति और इससे संबंध। आईओएसआर मानविकी और सामाजिक विज्ञान पत्रिका।

2. अख्तर, जेद. (2012). छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले सामाजिक–आर्थिक स्थिति के कारक : एक पूर्वानुमानात्मक अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान और शिक्षा की पत्रिका। बैटल, जे., और लूइस, एम. (2002). वर्ग का बढ़ता महत्वः राजनीति की दृष्टि से जाति और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव पर। गरीबी की पत्रिका।

3. एन, एफ. एम.–पी. (2014). ग्रामीण दक्षिण टेक्सास स्क्लों में प्राथमिक छात्र की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव।

4. चलिहा1, ए., और हाजारिका, एन. (2012). असम के डिब्रुगढ़ विश्वविद्यालय के पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन। सामाजिक विज्ञान अनुसंधानकर्ता।

5. फैटार, जी. एम. (2013). सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जाति और अल्पसंख्यक शिक्षा में उपलब्धि के संदर्भ में। शैक्षणिक शिक्षादिक्षा की पत्रिका, 1.9

6. ग्रेट्ज, बी. (2007). आर्थिक तनाव, माता–पिता के व्यवहार और युवाओं की उपलब्धिः अफ्रीकी अमेरिकी और यूरोपीय अमेरिकी एकल और दो माता–पिता परिवारों के बीच मॉडल समानता का परीक्षण। कनाडा शिक्षा की पत्रिका।

7. हिजाजी, टी., और नकवी, आर. (2006). छात्रों के प्रदर्शन पर प्रभाव डालने वाले कारकः निजी कॉलेजों का एक मामला। बांग्लादेश इ–सामाजिक विज्ञान पत्रिका।

8. होच्सचाइल्ड, जे. एल. (2003). सार्वजनिक स्कूलों में सामाजिक वर्ग। सामाजिक मुद्दों की पत्रिका।

9. इस्लाम, एम. आर., और खान, जे. एन. (2017), उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव, शैक्षिक प्रयासः शैक्षिक और लागू सामाजिक विज्ञान की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका।

10. कारेश्की, एच., – हाजीनेझाद, जे. (2014). मध्य पूर्व में छात्रों की गणित उपलब्धि पर स्कूल गुणवत्ता और परिवार के पृष्ठभूमि की बहुस्तरीय विश्लेषण। यूनिवर्सल जर्नल ऑफ शैक्षिक अनुसंधान।

11. कौर, जे., राणा, जे. एस., – कौर, आर. (2009). युवाओं के आत्म–अवलोकन के संबंध में गृह वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध। अध्ययन गृह और समुदाय विज्ञान, 3 (1), 13–17।

12. कुमार, के. यू., और राजेंद्रन, एस. (2016), तमिलनाडु के सलेम जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में जल और स्वच्छता सुविधाओं पर एक अध्ययन, अर्थशास्त्र भारतीय अर्थशास्त्र और अनुसंधान इंडियन जर्नल।

13. कुम्रा, डी. जे. (2015). उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव। विद्वानों की कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञानों की पत्रिका।

14. सैफी, एस., – महमूद, टी. (2011). छात्रों की उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव। अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान और शिक्षा की पत्रिका।

15. सिंह, ए., – सिंह, जे. पी. (2014). ''माता–पिता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और घर के वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव।'' शैक्षिक अनुसंधान।